जनसंख्या वृद्धि और तीव्र औद्योगीकरण से पर्यावरण असंतुलन और पारिस्थितिकी पर भारी दुष्प्रभाव : डॉ.भरतराज सिंह

Tuesday, June 8 2021| 1 minute read

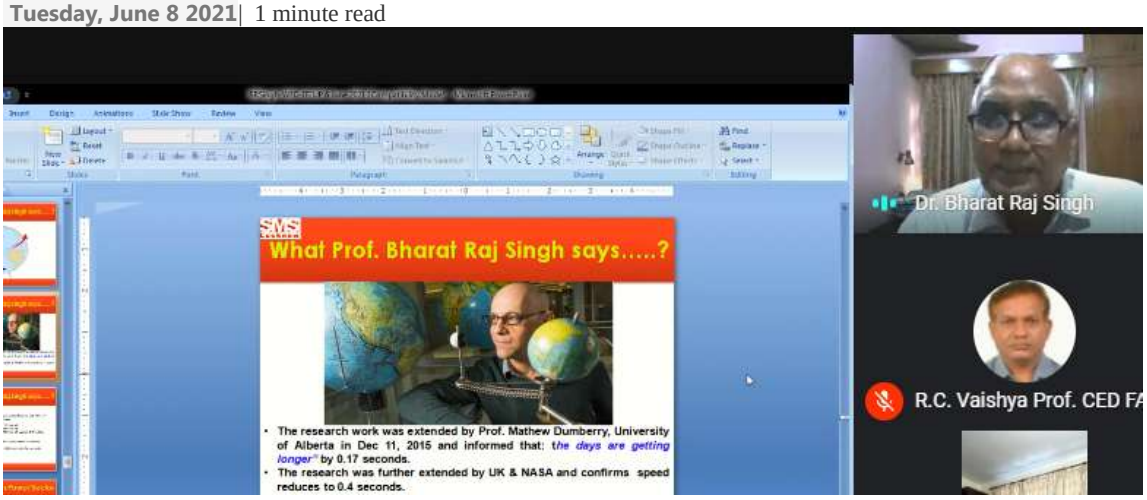

इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) यूपी स्टेट सेंटर में पर्यावरण दिवस पर वेबिनार

लखनऊ : रविवार 6 जून को इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) ने विश्व पर्यावरण दिवस पर 'पारिस्थितिकी तंत्र बहाली' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ई0 ए0के0 गुप्ता, अपर निदेशक, आर0सी0यू0ई0एस0, लखनऊ थे। ई0 गुप्ता ने बताया पारिस्थितिक बहाली से तात्पर्य पुनर्वास, पुनर्ग्रहण, पुन: निर्माण और बंजर भूमि की वसूली से है। ये प्रयास या तो छोटे पैमाने पर किए जा सकते हैं (जैसे वृक्षारोपण) या इसमें प्रमुख मानव और तकनीकी प्रयास शामिल हो सकते हैं (जैसे आर्द्रभूमि का पुन: निर्माण, एसिड लेक न्यूट्रलाइजेशन)। उन्होंने यह भी बताया कि कृषि-रसायनों, औद्योगिक से पानी की गुणवत्ता में गिरावट, पर्यावरणीय समस्याएं और घरेलू प्रदूषण, भूजल की कमी, जल जमाव, मिट्टी का स्टालिनाइजेशन, गाद, बंजर भूमि का क्षरण, पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव और विभिन्न स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न हुई हैं जो चिंता का विषय है। ऊर्जा और बुनियादी ढांचे के परिणाम से देश के पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर महत्वपूर्ण प्रभाव होता है।

पर्यावरणविद व महानिदेशक, स्कूल ऑफ़ मैनेजमेंट साइंसेज डा. भरत राज सिह ने बताया कि भारत में जनसंख्या वृद्धि और तीव्र औद्योगीकरण की बढ़ती मांग से विश्व के पर्यावरण असंतुलन और पारिस्थितिकी पर भारी दुष्प्रभाव पड़ा है। पृथ्वी के घूर्णन की गति धीमी हो रही है, जिसका उल्लेख उन्होंने 2015 के किताब ग्लोबल वार्मिंग में कर रखा है और उसमे भूकंप की संख्या 2-3 गुणा बढ़ने की आशंका जताई गयी थी, आज वह हो रहा है। डॉ सिंह के

इस कार्य को अल्बर्टा विश्वविद्यालय, कनाडा तथा यूके व नासा ने भी इस पर आगे शोध कार्य किया और वर्ष 2017 में बताया कि अब पृथ्वी की घूर्णन गति में 0.4 सेकंड की धीमी हो चुकी है। उनके शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है की यदि गति में यदि 3 से 4 सेकण्ड की कमी हुई तो आये दिन 7 से 8 रेक्टर स्केल से अधिक तीब्रता के 15 से 20 भूकंप, हर महीने कहीं न कहीं दुनिया में आयेंगे और जान-माल का नुकसान बहुत बढ़ जाएगा। यहां तक मकान आदि सभी जमीं दोज हो जायेंगे। वही दूसरी तेजी से पिघल रहे ग्लेशियर के कारण समुद्र की सतह में भी 12 से 13 फुट बढ़ोत्तरी हो जाने की संभावना बनी हुई है। इसके कारण मैक्सीको आदि देशों का अधिकांश भाग जलप्लावन से डूब जाएगा। इस पर विस्तार से प्रतिभागियो को जानकारी दी।

उन्होंने यह भी जिक्र किया कि हमें पारिस्थितिकी की बहाली के लिए पेड़ों को अधिकाधिक लगाना व बाहनो के उपयोग की संख्या कम करनी होगी अन्यथा महामारी, भूकंप, ग्लेशियर का टूटना, प्रलयकारी तूफानो आदि से वंचित नही हो पाएंगे। कार्यक्रम के शुरुआत में ई0 आर0के0 त्रिवेदी, अध्यक्ष, इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), यूपी स्टेट सेंटर, लखनऊ ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय परिषद सदस्य ई0 वी0बी0 सिंह भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन ई0 वी0के0 कथूरिया, एस0सी0सी0 सदस्य, संयोजक ने सफलतापूर्वक किया। कार्यक्रम का समापन ई0 प्रभात किरण चौरसिया, मानद सचिव, आई0ई0आई0, यू0पी0 स्टेट सेंटर के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

---

http://thelucknowtimes.com/due-to-population-growth-and-rapid-industrialization-environmental-imbalance-and-huge-impact-on-ecology-dr-bharatraj-singh/